ईलाज ए नबवी

कुरान से हर रोज़ इन को पढ़े ताकि हर बीमारी और जादू जिन्न से बचे

हाफिज रशीद सल्फ़ी

अ, जब्बार आलम सल्फ़ी

9755454629

HIFAAZAT

Qur'an aur Huzoor ﷺ ki
Duaaon ke zariye

① शैतान से हिफाज़त की दुआ

सुबह के वक्त पढ़ें

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ

مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

अउज़ु बिल्लाहिस समीइल अलीमि मिनश शैतानिर रजीमि

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ४९, अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह में आता हूँ, जो सुनने वाला और जानने वाला है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह के वक्त यह दुआ पढ़ेगा तो शाम तक शैतान के शर से महफूज़ हो जाएगा।

② किसी भी चीज़ के शर से हिफाज़त की दुआ

أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित ताम्माति मिन शर्रि मा खलक

[मुस्लिम : ७०५३, खौला बिनते हकीम رضی اللہ عنہا]

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला के मुकम्मल कलिमात की पनाह में आता हूँ तमाम मखलूक़ के शर से।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स किसी भी जगह पर क़याम करे फिर यह दुआ पढ़े तो जब तक वहाँ ठहरा रहेगा कोई चीज़ उस को नुक़सान नहीं पहुंचाएगी।

③ नज़रे बद का इलाज

اَللّٰهُمَّ أَذْهِبْ حَرَّهَا وَبَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

अल्लाहुम्म अज़्हिब हर्रहा व बरदहा व वसबहा

[अमलुल यौम वल्लैला लिन्नसई : १०३३, आमिर बिन रबीअह رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! नज़रे बद की गर्मी और उस की ठन्डक और उस की तकलीफ को दूर फर्मा।

फ़ज़ीलत/हदीस : एक शख्स को नज़र लग गई थी तो आप ﷺ ने उस के सीने पर हाथ रख कर यह दुआ फर्माई।

④ किसी से खतरे या खौफ के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِيْ نُحُوْرِهِمْ وَنَعُوْذُبِكَ

مِنْ شُرُوْرِهِمْ

अल्लाहुम्म इन्ना नजअलुक फी नुहूरिहिम व नऊज़ुबिक मिन शुरुरिहिम

[अबू दाऊद : १५३७, अब्दुल्लाह बिन अबी बर्दा رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! हम (अपनी हिफाज़त के लिये) आप को उन दुश्मनों के मुक़ाबल में पेश करते हैं और उन की बुराई से पनाह चाहते हैं।

फज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ जब किसी से खतरा महसूस करते, तो यह दुआ फर्माते।

⑤ ईमान पर साबित क़दमी की दुआ

يَا مُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِيْ عَلٰى دِيْنِكَ

या मुकल्लिबल कुलूबि सब्बित कल्बी अला दीनिक

[सुननुत तिर्मिज़ी : २१४०, अनस رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ दिलों को फ़ेरने वाले ! मेरा दिल अपने दीन पर जमा दे।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ कसरत से यह दुआ पढ़ा करते थे।

⑥ ग़म व परेशानी दूर करने के लिये

يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ أَسْتَغِيْثُ

या हय्यु या कय्यूमु बिरह्मतिक अस्तगीसु

[तिर्मिज़ी : ३५२४, अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ हमेशा ज़िन्दा रहने वाले, सब को थामने वाले ! मैं तेरी रहमत की उम्मीद के साथ तुझ से फर्याद करता हूँ।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ को जब कोई ग़म या परेशानी लाहिक़ होती तो यह कहा करते।

⑦ जहन्नम से नजात पाने की दुआ

सुबह व शाम ७ मरतबा पढें

اَللّٰهُمَّ أَجِرْنِيْ مِنَ النَّارِ

अल्लाहुम्म अजिरनी मिनन्नार

[अबू दाउद : ५७९]

तर्जमा : ए अल्लाह ! मुझे जहन्नम से नजात अता फरमाइये।

फ़ज़ीलत : हज़रत मुस्लिम बिन हारिस तमीमी رضی اللہ عنہ फरमाते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने उन के साथ सरगोशी फरमाई और फरमाया के जब तुम मग्रिब की नमाज़ से फारिग हो जाओ तो ७ मरतबा यह दुआ पढो, अगर तुम यह दुआ पढ लोगे और उसी रात में तुम्हारी वफात हो जाए, तो तुम्हारे लिये जहन्नम से खलासी लिख दी जाएगी, और जब तुम फज्र की नमाज़ पढलो, तो यह दुआ पढ लिया करो, अगर तुम एसा कर लेते हो, और उस दिन तुम्हारा इंतिकाल हो जाता है, तो तुम्हारे लिये जहन्नम से छुटकारा लिख दिया जाएगा।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तेरे इल्म के ज़रीये तुझ से भलाई माँगता हूँ, और तेरी क़ुदरत के ज़रीये तुझ से क़ुदरत तलब करता हूँ और तेरे अज़ीम फज्ल का तुझ से सवाल करता हूँ, इस लिये के तू (हर काम की) कुदरत रखता है और मैं (किसी भी काम की) कुदरत नहीं रखता और तू (सब कुछ) जानता है और मैं (कुछ) नहीं जानता, और तू ही तमाम छुपी हुई (बातों) को अच्छी तरह जानने वाला है। ऐ अल्लाह ! अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बेहतर है तो उस को मेरे लिये मुकद्दर फर्मा और उस को मेरे लिये आसान कर दे, फिर मेरे लिये उस में बरकत अता फर्मा और अगर तेरे इल्म में मेरे लिये यह काम मेरे दीन और दुनिया और मेरे काम के अन्जाम में बुरा है तो उस को मुझ से और मुझ को उस से दूर फर्मा और मेरे लिये भलाई मुकद्दर फर्मा, जहाँ कहीं भी हो, फ़िर उस पर मुझे राज़ी फर्मा।

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तखीरुक बिइल्मिक व अस्तकदिरुक बिकुदरतिक व अस्अलुक मिन फज़्लिकल अज़ीमि फइन्नक तकदिरु व ला अकदिरु व तअ्लमु वला अअ्लमु व अन्त अल्लामुल गुयूबि, अल्लाहुम्म इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र खैरुल ली फी दीनी व मआशी व आकिबति अम्री फक्दिरहु ली व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फीहि व इन कुन्त तअ्लमु अन्न हाज़ल अम्र शर्रुल ली फी दीनी व मआशी व आकिबति अम्री फस्रिफ्हु अन्नी वस्रिफ्नी अन्हु वक्दिर लियल खैर हैसु कान सुम्म अर्ज़िनी बिही

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْتَخِيْرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ

بِقُدْرَتِكَ وَأَسْئَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ الْعَظِيْمِ فَإِنَّكَ

تَقْدِرُ وَلَا أَقْدِرُ وَتَعْلَمُ وَلَا أَعْلَمُ وَأَنْتَ عَلَّامُ

الْغُيُوْبِ ط اَللّٰهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ

هٰذَا الْأَمْرَ خَيْرٌ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ

أَمْرِيْ فَاقْدِرْهُ لِيْ وَيَسِّرْهُ لِيْ ثُمَّ بَارِكْ لِيْ

فِيْهِ وَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّ هٰذَا الْأَمْرَ

شَرٌّ لِّيْ فِيْ دِيْنِيْ وَمَعَاشِيْ وَعَاقِبَةِ أَمْرِيْ

فَاصْرِفْهُ عَنِّيْ وَاصْرِفْنِيْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِيَ الْخَيْرَ

حَيْثُ كَانَ ثُمَّ أَرْضِنِيْ بِهٖ

⑫ नुक़सान से हिफाज़त (इस्तिखारा की दुआ)

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ फर्माते हैं के जिस ने इस्तिखारा कर लिया करे वह कभी नुक़सान नहीं उठाएगा। [तब्रानी औसत : ६६२७, अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ]

अल्लाह के फेसले पर राज़ी रहना इंसान की नेक बख्ती की अलामत है, और इस्तिखारा न करना बद किसमती है। [तिर्मिज़ी : २१५१, सअद رضی اللہ عنہ]

रसूलुल्लाह ﷺ इस्तिखारा इस तरह सिखाते थे, जैसे कुर्आन की सूरतें सिखाते। आप ﷺ फर्माते हैं जब कोई अहम काम हो तो दो रकात इस्तिखारा की निय्यत से नफ्ल नमाज़ पढ़ने के बाद इस्तिखारा की यह दुआ पढ़ें। [बुखारी : ६३८२, जाबिर رضی اللہ عنہ]

नोट : लफ्ज़ هٰذَا الْأَمْرَ दो जगह आया है यहाँ पहुंचे तो अपने उस काम का नाम लें या दिल में उस काम का खयाल करें जिस के बारे में इस्तिखारा किया है।

इस्तिखारा का जवाब : ख्वाब में उस चीज़ को देख ले या दिल में कोई बात जम जाए या जिस चीज़ के लिये इस्तिखारा किया गया है उस के लिये रास्ता आसान हो जाए या रुकावट पैदा हो जाए।

خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ

شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ

النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ

یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا
تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا

يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ

فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾ لا يَّهْدِيْٓ

اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ

اَحَدًا ﴿٢﴾ لا وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ

صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ لا وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ

سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ لا

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾ ۚ

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ

وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ

الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

مِنۡ كُلِّ جَانِبٍ ۝٨ ق صلے دُحُوۡرًا وَّلَهُمۡ عَذَابٌ

وَّاصِبٌ ۝٩ لا اِلَّا مَنۡ خَطِفَ الۡخَطۡفَةَ فَاَتۡبَعَهٗ

شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۝١٠ فَاسۡتَفۡتِهِمۡ اَهُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا

اَمۡ مَّنۡ خَلَقۡنَا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّنۡ طِيۡنٍ لَّازِبٍ ۝١١

يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ اِنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ

اَنۡ تَنۡفُذُوۡا مِنۡ اَقۡطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

فَانۡفُذُوۡا ؕ لَا تَنۡفُذُوۡنَ اِلَّا بِسُلۡطٰنٍ ۝٣٣ ج

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٤ يُرۡسَلُ عَلَيۡكُمَا

شُوَاظٌ مِّنۡ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنۡتَصِرٰنِ ۝٣٥ ج

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٦ فَاِذَا

انۡشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتۡ وَرۡدَةً كَالدِّهَانِ ۝٣٧ ج

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ

لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ

لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ

وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿۱﴾ ۙ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿۲﴾ ۙ

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿۳﴾ ۙ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿۴﴾ ؕ

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ

الْمَشَارِقِ ﴿۵﴾ ؕ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ

الْكَوَاكِبِ ﴿۶﴾ ۙ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿۷﴾ ۚ

لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ

رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا

فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا

لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۲۶﴾ تُوْلِجُ الَّیْلَ
فِی النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِی الَّیْلِ ۚ وَتُخْرِجُ
الْحَیَّ مِنَ الْمَیِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَیِّتَ مِنَ الْحَیِّ ۚ
وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَیْرِ حِسَابٍ ﴿۲۷﴾
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
فِیْ سِتَّةِ اَیَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰی عَلَی الْعَرْشِ ۟ یُغْشِی
الَّیْلَ النَّهَارَ یَطْلُبُهٗ حَثِیْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ﴿۵۴﴾
اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً ؕ اِنَّهٗ لَا یُحِبُّ
الْمُعْتَدِیْنَ ﴿۵۵﴾ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا فِی الْاَرْضِ

لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ؕ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ

تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۚ وَتُعِزُّ

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ

بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ز

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا

مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قَدْ

قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ

بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَالَّذِيْنَ

كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ

مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾

يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ
هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ
رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾
وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا
هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ ع
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ
عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ② الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ۙ③ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ④ اِيَّاكَ
نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ⑤ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ⑥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ
اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ⑤ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع ⑦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

الٓمّٓ ج ① ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ج
هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۙ② الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ
بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

⑳ हर फर्ज़ नमाज़ के बाद पढ़ें

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया :जो शख्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद

३३ मर्तबा

سُبْحَانَ اللّٰهِ

सुब्हानल्लाह

३३ मर्तबा

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

अल्हम्दुलिल्लाह

और ३४ मर्तबा

اَللّٰهُ أَكْبَرُ

अल्लाहु अक्बर

पढ़ता है वह कभी नुकसान में नहीं रहता।

[मुस्लिम : १३७७, कअब बिन उजरह رضی اللہ عنہ]

लेता हूँ अल्लाह की, जिस ने आसमान को ज़मीन पर गिरने से रोके रखा है, मखलूक़ की बुराई से और उस बुराई से जो फ़ैली है और शैतान के शर से और उस के शिर्क से।

फ़ज़ीलत / हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضی اللہ عنہما से फर्माया : बड़ा अच्छा होता के शाम के वक्त इस दुआ को तीन मर्तबा पढ़ लेते।

⑲ सगीरा गुनाहों से माफी की दुआ

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ

सुब्हानल्लाही वबिहमदिही

[बुखारी : ६४०५, अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : अल्लाह की ज़ात तमाम उयूबों से पाक है और तारीफ उसी के लिये है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जिस ने रोज़ाना १०० मरतबा यह दुआ पढी उस के (सगीरा) गुनाह माफ कर दिये जाएंगे, अगरचे कसरत में समंदर के झाग के बराबर हों।

⑱ आसेब और सहर वगेराह से हिफाज़त का नबवी नुस्खा

शाम में ३ मर्तबा पढ़ें

أَمْسَيْنَا وَأَمْسَى الْمُلْكُ لِلّٰهِ وَالْحَمْدُ كُلُّهُ لِلّٰهِ

أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِيْ يُمْسِكُ السَّمَاءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى

الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَمِنْ

شَرِّ الشَّيْطَانِ وَشِرْكِهِ

अम्सयना व अम्सल मुल्कु लिल्लाहि वल्हम्दु कुल्लुहू लिल्लाहि अऊज़ु बिल्लाहिल्लज़ी युम्सिकु स्समाअ अन तकअ अलल अर्ज़ि इल्ला बिइज़निहि मिन शर्रि मा खलक व ज़रअ व मिन शर्रिश्शैतानि व शिर्किहि

[अमलुल यौम वल्लैला लिब्ने सुन्नी : ६७]

तर्जमा : अल्लाह के लिये हम ने और पूरी सलतनत ने शाम की, तमाम तारीफ अल्लाह के लिये हैं, मैं पनाह

⑰ शैतान के असरात से हिफाज़त, और भी कई फवाइद

१० मर्तबा सुबह और १० मर्तबा शाम में पढ़ें

لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ ، لَهُ الْمُلْكُ

وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु व हुव अला कुल्लि शयइन कदीर

[मुस्नदे अहमद : ८७१९, अबू हुरैरह رضی اللہ عنہ]

फ़ज़ीलत/हदीस : जो शख्स सुबह यह कलिमात दस मर्तबा पढ़े तो उस के लिये सौ नेकियाँ लिखी जाएँगी, और सौ गुनाह माफ किये जाएँगे और उस के लिये एक गुलाम आज़ाद करने के बराबर सवाब होगा। और शाम तक हिफाज़त में रहेगा और जिस ने शाम को पढ़ा तो सुबह तक उस के लिये ऐसा ही होता है।

⑯ तमाम ज़रूरतों का हल

सुबह व शाम ७ मर्तबा पढ़ें

حَسْبِيَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ

وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

हस्बियल लाहु ला इलाह इल्ला हुव
अलयहि तवक्कल्तु
व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम

[अबू दाऊद : ५०८१, अबू दर्दा رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : मेरे लिये अल्लाह तआला काफी है जिस के अलावा कोई माबूद नहीं, उस पर मैं ने भरोसा किया और वह अर्शे अज़ीम का रब है।

फ़ज़ीलत/हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के जो शख्स सुबह व शाम सात मर्तबा यह दुआ यक़ीन के साथ या बगैर यक़ीन के पढ़ ले तो अल्लाह तआला उस के हर अहम मसले की कफालत फर्माएंगे।

(१५) नुक़सान से बचने की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ

وَلَا فِي السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ

बिस्मिल्लाहिल लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शयउन फिल अर्ज़ि वला फिस समाइ व हुवस्समीउल अलीम

[तिर्मिज़ी : ३३८८, उसमान बिन अफ्फान رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : अल्लाह के नाम के साथ मैं ने सुबह की जिस के नाम की बरकत से कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचाती, ज़मीन में और न आसमान में और वही खूब सुनने वाला, बड़ा जानने वाला है।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ ने फर्माया : जो शख्स सुबह व शाम तीन मर्तबा यह दुआ पढ़ लिया करे, उसे कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती।

⑭ बदन की सलामती की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ،

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहुम्म आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्म आफिनी फी सम्ई, अल्लाहुम्म आफिनी फी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त

[अबू दाऊद : ५०९०, अबू बकरह رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे बदन को दुरुस्त रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरे कान आफियत से रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरी आँखें आफियत से रखिये, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ रोज़ाना सुबह व शाम के वक़्त यह दुआ तीन तीन बार पढ़ा करते थे।

⑭ बदन की सलामती की दुआ

सुबह व शाम ३ मर्तबा पढ़ें

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَدَنِيْ، اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ سَمْعِيْ،

اَللّٰهُمَّ عَافِنِيْ فِيْ بَصَرِيْ، لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ

अल्लाहुम्म आफिनी फी बदनी, अल्लाहुम्म आफिनी फी सम्ई, अल्लाहुम्म आफिनी फी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त

[अबू दाऊद : ५०९०, अबू बकरह رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मेरे बदन को दुरुस्त रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरे कान आफियत से रखिये, ऐ अल्लाह ! मेरी आँखें आफियत से रखिये, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं।

फ़ज़ीलत/हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ रोज़ाना सुबह व शाम के वक़्त यह दुआ तीन तीन बार पढ़ा करते थे।

अल्लाहुम्मस्तुर औराती व आमिन रौआती, अल्लाहुम्मह फज़नी मिम बैनि यदय्य व मिन खल्फी व अैंय यमीनी वअन शिमाली व मिन फौकी व अउज़ु बिअज़मतिक अन उग्ताल मिन तह्ती

[अबू दाऊद : ५०७४, इब्ने उमर رضی اللہ عنہما]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं आप से आफियत माँगता हूँ, दुनिया और आखिरत में, ऐ अल्लाह ! मैं आप से माफी और सलामती माँगता हूँ मेरे दीन पर मेरी दुनिया में और मेरे घर वालों में और मेरे माल में, ऐ अल्लाह! ढाँप ले मेरे ऐबों को और खौफ की चीजों से मुझे अमान दे। ऐ अल्लाह ! मेरी हिफाज़त कर मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाएं से और मेरे बाएं से और मेरे ऊपर से। और मैं आप की अज़मत की पनाह लेता हूँ इस से के हलाक किया जाऊँ मेरे नीचे से।

फज़ीलत/हदीस : हज़ूर ﷺ हमेशा सुबह व शाम यह दुआ पढ़ा करते थे।

⑬ हर किस्म की आफियत का नबवी नुस्खा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ،

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَسْئَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِيْ دِيْنِيْ

وَدُنْيَايَ وَأَهْلِيْ وَمَالِيْ، اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِيْ

وَاٰمِنْ رَوْعَاتِيْ، اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِيْ مِنْ بَيْنِ

يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِيْ وَعَنْ يَّمِيْنِيْ وَعَنْ شِمَالِيْ وَمِنْ

فَوْقِيْ وَأَعُوْذُ بِعَظْمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِيْ

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल अफ्व
वल आफियत फिद्दुनया वल आखिरति,
अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल अफ्व
वल आफियत फी दीनी व दुनयाय
व अह्ली व माली,

अल्लाह ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ और गुनाहों से बचने और नेक कामों के करने की ताकत अल्लाह की मदद ही से मिलती है जो बुलन्दी वाला, अज़मत वाला है, मैं यक़ीन करता हूँ के अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी कुदरत रखने वाला है और यह के अल्लाह तआला का इल्म हर चीज़ को घेरे हुए है। ऐ अल्लाह ! मैं आप की पनाह माँगता हूँ, मेरे नफ्स की बुराई से और हर उस जानवर की बुराई से जिस की पेशानी आप के क़बज़े में है, बे शक़ मेरा रब सीधे रास्ते पर है।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत अबू दर्दा رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के मैं ने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को फर्माते हुए सुना के जो शख्स इन कलिमात को सुबह पढ़े तो शाम तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी। और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक कोई मुसीबत नहीं पहुंचेगी।

अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाह इल्ला अन्त अलैक तवक्कल्तु व अन्त रब्बुल अर्शिल अज़ीम मा शाअल्लाहु कान व मा लम यशअ लम यकुन व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमि अअ्लमु अन्नल लाह अलाकुल्लि शयइन कदीरुंव्व व अन्नल्लाह कद अहात बिकुल्लि शयइन इल्मन अल्लाहुम्म इन्नी अउज़ु बिक मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आखिज़ुन बिना सियतिहा इन्न रब्बी अला सिरातिम मुस्तकीम

[इब्ने सुन्नी : ५७, अबू दर्दा رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! आप ही मेरे पालने वाले हैं, आप के सिवा कोई इबादत के लाइक नहीं है, आप ही पर मैं ने भरोसा किया और आप ही अज़ीम अर्श के मालिक हैं, जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हुआ और जो

⑫ मुसीबतों से नजात हासिल करने का नबवी नुस्खा

सुबह व शाम पढ़ें

اَللّٰهُمَّ أَنْتَ رَبِّيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا أَنْتَ عَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ

وَأَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ مَا شَآءَ اللّٰهُ كَانَ وَمَا لَمْ

يَشَأْ لَمْ يَكُنْ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ

الْعَظِيْمِ أَعْلَمُ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ

وَّأَنَّ اللّٰهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ

أَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِيْ وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ

أَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا إِنَّ رَبِّيْ عَلٰى صِرَاطٍ

مُّسْتَقِيْمٍ

तर्जमा : मैं अल्लाह की उस अज़ीम ज़ात की पनाह माँगता हूँ के जिस से कोई चीज़ बड़ी नहीं है और (पनाह माँगता हूँ) अल्लाह के उन कलिमात की जिन से आगे नहीं बढ़ता है कोई नेक और कोई बुरा शख्स, और (पनाह माँगता हूँ) अल्लाह के तमाम नामों की जो मुझे मालूम है और जो मुझे मालूम नहीं है, उन तमाम चीज़ों की बुराई से जो उस ने पैदा की और ठीक बनाई और फ़ैलाई।

फज़ीलत/हदीस : हज़रत कअब अहबार رضی اللہ عنہ फर्माते हैं के अगर मैं यह दुआ न पढ़ता तो यहूद जादू के ज़ोर से मुझे गधा बना देते।

⑪ जादू से हिफाज़त का नुस्खा

أَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِيْ لَيْسَ شَيْءٌ

أَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ الَّتِيْ

لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ وَّبِأَسْمَآءِ اللّٰهِ

الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ أَعْلَمْ

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَبَرَأَ وَذَرَأَ

अऊज़ु बि वजहिल्लाहिल अज़ीमिल लज़ी
लयस शयउन अअ्ज़म मिन्हु
व बिकलिमातिल लाहित ताम्मातिल लाती
ला युजाविज़ुहुन्न बरुंव्वला फाजिरुंव्व
बिअस्माइल्लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा
अलिम्तु मिन्हा व मा लम अअ्लम मिन शर्रि
मा खलक व बरअ व ज़रअ

[मोअत्ता इमाम मालिक : ३५०२, कअब अहबार رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं न डरने वाले दिल, कुबूल न होने वाली दुआ, सैर न होने वाले नफ्स और नफा न पहुंचाने वाले इल्म से तेरी पनाह चाहता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं इन चारों चीज़ों से तेरी पनाह लेता हूँ।

फज़ीलत / हदीस : रसूलुल्लाह ﷺ यह दुआ फर्माते थे।

⑩ ४ चीज़ों से बचने की दुआ

اَللّٰهُمَّ إِنِّيْ أَعُوْذُبِكَ مِنْ قَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ

وَمِنْ دُعَاءٍ لَّا يُسْمَعُ وَمِنْ نَفْسٍ لَّا تَشْبَعُ

وَمِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ، أَعُوْذُبِكَ مِنْ

هٰؤُلَاءِ الْأَرْبَعِ

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन
कल्बिल ला यखशउ व मिन दुआइल
ला युस्मउ व मिन नफ्सिल ला तश्बउ
व मिन इल्मिल ला यनफउ अऊज़ु बिक
मिन हा उलाइल अर्बइ

[तिर्मिज़ी: ३४८२, अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہما]

फ़ज़ीलत/हदीस : हज़रत जिब्रईल عليه السلام नबी ﷺ के पास आए और अर्ज़ किया : ऐ मुहम्मद ﷺ ! आप बीमार हैं ? आप ﷺ ने फर्माया : जी हाँ ! तो जिब्रईल عليه السلام ने यह दुआ दी।

⑨ बीमारी (नज़रे बद वग़ैरा) से हिफाज़त की दुआ

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيكَ مِنْ

شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ أَوْ عَيْنِ حَاسِدٍ اَللّٰهُ يَشْفِيكَ

بِسْمِ اللّٰهِ أَرْقِيكَ

बिस्मिल्लाहि अरकीक मिन कुल्लि शयइन युअज़ीक मिन शर्रि कुल्लि नफ्सिन अव अयनि हासिदिन, अल्लाहु यश्फीक, बिस्मिल्लाहि अरकीक

[मुस्लिम : ५८२९, अबू सईद رضی اللہ عنہ]

तर्जमा : मैं अल्लाह का नाम ले कर तुझ पर दम करता हूँ, हर उस चीज़ से बचने के लिये जो तुझे तक़लीफ देती है और हर नफ्स के शर से और हर हासिद की आँख के शर से। अल्लाह तुझे शिफा दे, अल्लाह का नाम ले कर मैं तुझ पर दम करता हूँ।

خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾

وَ مِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الْعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَ مِنْ

شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ

النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ

الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ

یُوَسْوِسُ فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ يٰٓاَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ﴿۱﴾ لَآ اَعْبُدُ مَا
تَعْبُدُوْنَ ۙ﴿۲﴾ وَلَآ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ۚ﴿۳﴾
وَلَآ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ﴿۴﴾ وَلَآ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَآ اَعْبُدُ ؕ﴿۵﴾ لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ﴿۶﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ﴿۳﴾ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ
كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنْ شَرِّ مَا

يُشْرِكُوْنَ ﴿٢٣﴾ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ

الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ

مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ

الْحَكِيْمُ ﴿٢٤﴾ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ

فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ﴿١﴾ لا يَّهْدِيْٓ

اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ؕ وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ

اَحَدًا ﴿٢﴾ لا وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ

صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ﴿٣﴾ لا وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ

سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ﴿٤﴾ لا

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٣٨﴾ فَيَوْمَئِذٍ

لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ﴿٣٩﴾

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٠﴾

لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا

مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ

نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢١﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ

وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿٢٢﴾

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ

الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ

الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا

مِنۡ كُلِّ جَانِبٍ ۞ ٨ دُحُوۡرًا وَّلَهُمۡ عَذَابٌ

وَّاصِبٌ ۞ ٩ اِلَّا مَنۡ خَطِفَ الۡخَطۡفَةَ فَاَتۡبَعَهٗ

شِهَابٌ ثَاقِبٌ ۞ ١٠ فَاسۡتَفۡتِهِمۡ اَهُمۡ اَشَدُّ خَلۡقًا

اَمۡ مَّنۡ خَلَقۡنَا ؕ اِنَّا خَلَقۡنٰهُمۡ مِّنۡ طِيۡنٍ لَّازِبٍ ۞ ١١

يٰمَعۡشَرَ الۡجِنِّ وَالۡاِنۡسِ اِنِ اسۡتَطَعۡتُمۡ

اَنۡ تَنۡفُذُوۡا مِنۡ اَقۡطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ

فَانۡفُذُوۡا ؕ لَا تَنۡفُذُوۡنَ اِلَّا بِسُلۡطٰنٍ ۞ ٣٣

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ ٣٤ يُرۡسَلُ عَلَيۡكُمَا

شُوَاظٌ مِّنۡ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنۡتَصِرٰنِ ۞ ٣٥

فَبِاَىِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۞ ٣٦ فَاِذَا

انۡشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتۡ وَرۡدَةً كَالدِّهَانِ ۞ ٣٧

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرْهَانَ
لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ
لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿۱۱۷﴾ وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ
وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿۱۱۸﴾ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ﴿۱﴾ فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ﴿۲﴾
فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ﴿۳﴾ اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ﴿۴﴾
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ
الْمَشَارِقِ ﴿۵﴾ اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ
الْكَوَاكِبِ ﴿۶﴾ وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ﴿۷﴾ ج
لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ

بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ؕ اِنَّ

رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٥٦﴾

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا

فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١١٠﴾

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ

يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ

وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿١١١﴾

اَفَحَسِبْتُمْ اَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّاَنَّكُمْ اِلَيْنَا

لَا تُرْجَعُوْنَ ﴿١١٥﴾ فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ

لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ﴿١١٦﴾

إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٦﴾ تُوْلِجُ الَّيْلَ

فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ

الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ

وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾

إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ

فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ۟ يُغْشِي

الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ

وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ ؕ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ

وَالْاَمْرُ ؕ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٥٤﴾

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

الْمُعْتَدِيْنَ ﴿٥٥﴾ ۚ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ

لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا

وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ

مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ

لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۟ وَاغْفِرْ لَنَا ۟ وَارْحَمْنَا ۟

اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٨٦﴾ ع

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ

وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٨﴾ ؕ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ

تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۚ وَتُعِزُّ

مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ وَاِنْ

تُبْدُوْا مَا فِيْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ

بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ

مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٢٨٤﴾

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ

وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ

وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۫ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ

مِّنْ رُّسُلِهٖ ۫ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۫

غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَ اِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ﴿٢٨٥﴾

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ لَهَا

مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ رَبَّنَا

عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ

السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ

وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿٢٥٥﴾ لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ ۙ قف

قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ

بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ

بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۗ وَاللّٰهُ

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾ اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ

يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ وَالَّذِيْنَ

كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ يُخْرِجُوْنَهُمْ

مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۗ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ

النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾ ع

يُنْفِقُوْنَ ۙ﴿۳﴾ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ

اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ

هُمْ يُوْقِنُوْنَ ؕ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ

رَّبِّهِمْ ۗ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا

هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ ع

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ۵

لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ

وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ

عِنْدَهٗٓ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ

وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ①

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ② لا الرَّحْمٰنِ

الرَّحِيْمِ ③ لا مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ④ ط اِيَّاكَ

نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ⑤ ط اِهْدِنَا

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑥ لا صِرَاطَ الَّذِيْنَ

اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ⑤ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ

وَلَا الضَّآلِّيْنَ ⑦ ع

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ ① ج ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ ج فِيْهِ ۚ

هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ② لا الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ

بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

फ़ज़ीलत

हज़रत अबू लैला ﷺ फ़र्माते हैं के मैं खिदमते नब्वी में हाज़िर था के एक देहाती आया और कहने लगा : मेरे भाई को तकलीफ़ है । आप ﷺ ने दरयाफ़्त फ़र्माया : "क्या तकलीफ़ है"? उस ने कहा : कुछ असरात हैं । आप ﷺ ने फ़र्माया : "उसे मेरे पास लाओ" । चुनांचे लाया गया, तो हुज़ूर ﷺ ने चंद आयतें पढ़ कर दम फ़र्मा दीं, जिस से वह बिल्कुल ठीक हो गया । वह आयतें यह हैं : सूर-ए-फ़ातिहा, शुरू सूर-ए- बक़रा की चार आयतें और दर्मियान की दो आयतें ﴿وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ﴾ और आयतुलकुर्सी और सूर-ए-बक़रा की आखरी तीन आयतें और सूर-ए-आले इम्रान की एक आयत ﴿شَهِدَ اللّٰهُ﴾ और सूर-ए-आराफ़ की एक आयत ﴿اِنَّ رَبَّكُمُ﴾ और सूर-ए-मोमिनून की एक आयत ﴿وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ﴾ और सूर-ए-जिन की एक आयत ﴿وَاَنَّهٗ تَعَالٰى﴾ और शूरू सूर-ए-साफ़्फ़ात की दस आयतें और सूर-ए-हश्र की आखरी तीन आयतें फिर ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ , ﴿قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ﴾ ।

[इब्ने माजा : ३५४९]